The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 7 | July 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

सोशल मीडिया का शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ0 अजय कुमार प्रजापति
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
श्री विक्रमा चौहान स्मारक महाविद्यालय, रामपुर, भुजही आजमगढ़ (उ0प्र0)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

शिक्षा, सोशल मीडिया उपयोगकर्ता

ABSTRACT

सोशल मीडिया हमारी आंखों के सामने तेजी से विकसित हो रहा है और इस नवीनतम तकनीक से हमारे बच्चों को अस्वीकार करना और छिपा पाना व्यावहारिक रूप से मुश्किल हो रहा है। मीडिया की पहुँच व्यापक हो रही है। सर्वेक्षण कहता है कि और 73 प्रतिषत भारतीय बच्चे सेल फोन उपयोगकर्ता हैं और प्रत्येक वर्ष गेमिंग और इंटरनेट के आदी बच्चों का प्रतिशत बढ़ रहा है। 2017 में भारत में स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं की वृद्धि की वार्षिक दर लगभग 1. 29 प्रतिषत है, जो चीन 1.09 प्रतिषत से भी अधिक है। हमारे देश के विभिन्न शहरों में इंटरनेट डेडडिक्शन सेंटर शुरू किए गए हैं। प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया का बच्चों पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों का प्रभाव पड़ता है। यह भविष्य की पीढ़ी के इष्टतम विकास और विकास के लिए प्रभावी रूप से उपयोग करने के लिए प्रौद्योगिकी और मीडिया के लाभों और नकारात्मक प्रभावों को समझने का उच्च समय है। 21 वीं सदी को हम यदि मीडिया की सदी कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। शिक्षा के क्षेत्र में नये–नये आयामों द्वारा शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण उपलब्धियों का पहाड़ सा खड़ा कर दिया है। जिसमें मीडिया की लोकप्रियता सर्वत्र छायी रही। मीडिया ने न केवल वर्तमान में अपितु स्वतन्त्रता संग्राम में भी अपनी पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय तथा स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों के वैचारिक यज्ञ की यशोगाथा का प्रमाणिक अभिलेख प्रस्तुत किया है। संभवत अखबार ही पहला जनसंपर्क माध्यम था, इसके बाद मल्टीमीडिया का प्रयोग हुआ। 1895 में मारकोनी ने बेतार रेडियो संदेश भेजा था फिर 1901 में टेलीग्राफ का प्रयोग रेडियो के द्वारा शुरू हुआ,

आज भी रेडियो तंरग ऑडियो प्रसारण में प्रयोग हो रहा है।

प्रस्तावना :–

सोशल मीडिया दुनिया भर में सामाजिक संपर्क को सुविधाजनक बनाने के लिए बनाया गया ऐप्स का एक नेटवर्क है। विभिन्न ऐप्स और साइटें अनुकूलित प्लेटफ़ॉर्म बनाने में योगदान देती हैं जो मनोरंजन और सूचना के बीच संतुलन प्रदान करने के लिए विकसित हुए हैं। शिक्षा उद्योग सहित प्रत्येक उद्योग, विभिन्न तकनीकी प्रगति से लाभान्वित होता है। शिक्षा पर सोशल मीडिया के प्रभाव ने छात्रों को वैष्विक स्तर पर लोगों से जुड़कर सीखने की एक नई दुनिया से परिचित होने में मदद की है।

कोविड–19 महामारी ने दुनिया भर में शैक्षणिक प्रणालियों को प्रभावित किया। मार्च 2020 में COVID–19 के मामलों की संख्या बढ़ने लगी और कई शैक्षणिक संस्थान और विष्वविद्यालय बंद हो गए। अधिकांश देशों ने COVID–19 के प्रसार को कम करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों को अस्थायी रूप से बंद करने का निर्णय लिया। यूनेस्को का अनुमान है कि अप्रैल 2020 में बंदी के चरम पर, राष्ट्रीय शैक्षिक बंदी ने 200 देशों में लगभग 1.6 बिलियन छात्रों को प्रभावित किया। 94% विद्यार्थी जो कि लगभग आबादी और वैष्विक आबादी का पांचवां हिस्सा थे, प्रभावित हुए। अनुमान है कि यह बंदी औसतन 41 सप्ताह (10.3 महीने) तक चली। इनका छात्रों की पढ़ाई पर महत्वपूर्ण नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, जिसका शिक्षा और कमाई दोनों पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ने का अनुमान है। महामारी के दौरान केवल सोषल मीडिया ही शिक्षा बजट और शिक्षा के लिए आधिकारिक सहायता कार्यक्रम से बजट में कमी आई है।

गरीबी वाले देशों में वैष्विक स्तर पर शिक्षा में नामांकित छात्रों की कुल आबादी में से, यूनेस्को ने 31 मार्च 2020 तक बताया कि 89% से अधिक लोग COVID–19 बंद होने के कारण स्कूल से बाहर थे। यह 1.54 अरब बच्चों और स्कूल या विष्वविद्यालय में नामांकित युवाओं का प्रतिनिधित्व करता है, जिनमें लगभग 743 मिलियन लड़कियाँ भी शामिल हैं।

16 मार्च 2020 को भारत ने स्कूलों और कॉलेजों पर देशव्यापी तालाबंदी की घोषणा की। 19 मार्च 2020 को विष्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विष्वविद्यालयों को 31 मार्च 2020 तक परीक्षाएं स्थगित करने को कहा। सीबीएसई और आईसीएसई बोर्ड द्वारा आयोजित बोर्ड परीक्षाएं पहले 31 मार्च 2020 तक और फिर बाद में जुलाई तक के लिए स्थगित कर दी गईं। इस अवधि में बच्चों की षिक्षा स्कूलों एवं विष्वविद्यालयों ने सोषल मीडिया के माध्यम से षिक्षा प्रारम्भ किया। इस तथ्य के बावजूद कि कोविड–19 से पहले, भारत में केवल एक चौथाई घरों (24 प्रतिशत) के पास इंटरनेट की व्यवस्था हो गयी थी और एक ग्रामीण–शहरी क्षेत्र का बड़ा भाग सोषल मीडिया से प्रभावित हो गया था, इसके बावजूद विद्यार्थियों को ऑनलाइन सीखने को प्रोत्साहित किया गया था।

सोशल मीडिया का विकास

1844 में अपने विकास के बाद से, सोशल मीडिया ने खुद को जबरदस्त तरीके से बदला और अनुकूलित किया है और ऐसा करना जारी रखा है। इसकी शुरुआत लोगों के बीच सूचनाओं के इलेक्ट्रॉनिक आदान–प्रदान के साधन के रूप में हुई और हाल के वर्षों में यह मिलन और पुनर्मिलन के लिए एक आभासी स्थान बन गया है। इतना ही नहीं, सोशल मीडिया अध्ययन सामग्री और अन्य शैक्षिक संसाधनों की पेशकश के लिए एक गतिशील और शानदार मंच बन गया है। 21वीं सदी में वर्चुअल टूल का उपयोग दुनिया भर में विभिन्न प्रकार के दर्शकों तक पहुंचने के लिए खुदरा और विपणन उद्देश्यों के लिए भी किया जाता है। दुनिया भर में लोग सोशल मीडिया ऐप्स के माध्यम से जुड़ सकते हैं, जानकारी साझा कर सकते हैं और खुद को या अपने ब्रांड को बढ़ावा दे सकते हैं।

प्रारंभ में, यूट्यूब, व्हाट्सएप और फेसबुक दुनिया भर के लोगों द्वारा सबसे प्रमुख और अत्यधिक उपयोग किए जाने वाले सोशल मीडिया ऐप थे, लेकिन समय के साथ इंस्टाग्राम, टेलीग्राम, ट्वीटर और लिंक्डइन ने भी लोकप्रियता हासिल की। कोविड–19 लॉकडाउन के दौरान, जब दुनिया को ऑनलाइन मोड में स्थानांतरित होने के लिए मजबूर होना पड़ा, तो Zoom, Gmeet और MsTeams, Jiomeet जैसे कई अन्य ऐप्स ने व्यवसाय और शैक्षिक क्षेत्रों में काफी लोकप्रियता हासिल की। ये ऐप्स सामाजिक संपर्क से लेकर शीर्ष सूचना साझाकरण तक विभिन्न सुविधाएं प्रदान करते हैं। वे अपनी लोकप्रियता बढ़ाने के लिए दर्शकों की ज़रूरतों के आधार पर नई सुविधाएँ पेश करते रहते हैं। ये सुविधाएँ बड़े पैमाने पर लोगों को लाभान्वित करती हैं।

हालाँकि शैक्षणिक संस्थान कभी भी छात्रों को सोशल साइट्स या स्मार्ट उपकरणों पर अधिक समय बिताने की अनुमति देने के बड़े प्रशंसक नहीं रहे हैं, लेकिन बदलती जरूरतों के कारण उन्हें तकनीकी क्रांतियों को एकीकृत करना पड़ा और इसलिए, सोशल मीडिया ऐप्स का उपयोग उनकी शिक्षण पद्धति में हुआ।

सोशल मीडिया का शिक्षा पर प्रभाव :–

इन दिनों, छात्रों का एक बड़ा हिस्सा रोजाना स्मार्ट गैजेट्स और सोशल मीडिया तक पहुंच रखता है और अपना खाली समय उन्हें स्क्रॉल करने में बिताता है। इसलिए, यह उस समय का उपयोग करने, सीखने और उससे कुछ उत्पादक निकालने का एक शानदार तरीका है। सोशल मीडिया ऐप्स और साइटों ने शैक्षणिक संस्थानों की आवश्यकताओं के समन्वय और पूर्ति के लिए खुद को संशोधित किया है। शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों को संसाधनों और ऑनलाइन अध्ययन सामग्री से अत्यधिक लाभ होता रहता है।

1. **लिंक्डइन** – इसे आधिकारिक तौर पर 05 मई 2003 में लॉच किया गया। इसके संस्थापक रयॉन रोस्लान्स्की एवं सह संस्थापक रीड़ हॉफमैन हैं। यह नौकरियों की तलाश करने और विभिन्न उद्योगों और विषयों के बारे में अपडेट पाने के लिए एक पेशेवर प्रोफ़ाइल बनाने के लिए एक प्रसिद्ध साइट है। यह आपको कुशल बनाने और आपकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पाठ्यक्रम भी प्रदान करता हैं। यह छात्रों को अधिक सीखने में मदद करने के लिए निःशुल्क और सशुल्क पाठ्यक्रम सामग्री प्रदान करता है। इस समय लगभग 850 मिलियन सदस्य विष्व स्तर पर जुड़े हुए है।

2. **ट्वीटर** – इसकी स्थापना मार्च 2006 में जैक डोरसी,नूहग्लॉस, विजस्टोन और इवान विलियमस सहित संस्थापकों के एक समूह द्वारा की गयी। ट्वीटर पर पंजीकृत उपयोगकर्ता टेक्स्ट, चित्र, वीडियों पोस्ट कर सकते है। ट्वीटर पर जॉनीमानी हस्तियाँ (फिल्मी, राजनेता, उद्योगपति, प्रसिद्ध समाजसेवी आदि) अपने फैन्स, रिस्तेदार एवं अपने फॉलोवर्स को ट्वीट एवं रिट्वीट करते हैं इसका प्रभाव त्वरित होता है।
3. **यूट्यूब** – इसे पेपैल के तीन पूर्व कर्मचारियों चार्डहरर्ले, स्टीवचैन और जावेद करीम ने मिलकर फरवरी 2005 में बनाया था, जिसे नवम्बर 2006 में गूगल ने 1.65 अरब अमेरिकी डालर में खरीद लिया। छात्रों ने शैक्षिक और अन्य मनोरंजन वीडियो तक पहुंचने के लिए यूट्यूब का उपयोग किया है। लेकिन ऐप पर अध्ययन सामग्री की सीमित उपलब्धता को लेकर छात्र चिंतित थे । लॉकडाउन के बाद, कई शिक्षकों और शैक्षिक फर्मों ने विविध विषयों से संबंधित वीडियो अपलोड किए। इसलिए अब, छात्रों के लिए YouTube को एक शैक्षिक संसाधन के रूप में उपयोग करना आसान हो गया है।
4. **इंस्टाग्राम** – इसकी स्थापना केबिन सिस्ट्रांम और माइक क्रेगर के द्वारा 2010 में की गयी जिसकों ऐप के माध्यम से 06 अक्टूबर 2010 को संचालित किया गया। इंस्टाग्राम को वह लोकप्रियता हासिल करने में कुछ समय लगा जिसका वह हकदार था। हाल ही में, छात्र शैक्षिक वीडियो ढूंढ सकते हैं, अपनी परियोजनाएं और नवाचार अपलोड कर सकते हैं और हैशटैग का उपयोग करके वैश्विक भीड़ तक पहुंच सकते हैं। यह उन लोगों और समुदायों से जुड़ने का एक प्रभावी तरीका है जिनकी रुचि आपके बच्चे के समान है।
5. **वॉट्सऐप** – एक प्रकार का त्वरित संदेष भेजने एवं प्राप्त काने वाला मोबाइल एप है। इसे लैपटॉप एवं कम्प्यूटर से भी संचालित किया जा सकता है। इस ऐप को माउन्टेनव्यू कैलीफोर्निया में स्थित वॉट्सऐप आई.एन.सी. ने बनाया जिसे फरवरी 2014 में फेसबुक ने लगभग 1.5 लाख करोड़ में खरीदा। इस ऐप के माध्यम से ऑडियो, वीडियो मैसेज के साथ कॉल, वीडियों कॉल एवं ग्रुप चैटिंग जैसी सुविधाएं शैक्षिक कार्य एवं अन्य आवष्यक कार्य के लिए उपयोगी सिद्ध है।
6. **रेडियो(1923), फेसबुक (2004) और टेलीग्राम (2013)** – इन सोशल साइटों का देश भर में लाखों उपयोगकर्ताओं द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और इसलिए इनमें विविधता पैदा करने वाले कई समुदाय हैं। छात्र इन सोशल मीडिया साइटों के माध्यम से विभिन्न विशेषज्ञों, नए मित्रों और संबंधित समुदायों से जुड़ सकते हैं और अपने ज्ञान का विस्तार कर सकते हैं। यह आपके सीखने को साझा करने और बढ़ाने के लिए भी एक उपयुक्त मंच है। शिक्षकों ने एक ही बार में जानकारी और अध्ययन सामग्री साझा करने के लिए विभिन्न रेडियो,फेसबुक एवं टेलीग्राम चैनल बनाए हैं।
7. **Zoom (2013), Gmeet(2017), MsTeams(2017) और Jiomeet (2020)** – ये सोशल मीडिया साइट्स नहीं बल्कि वीडियो–कॉन्फ्रेंसिंग ऐप हैं। लेकिन दुनिया भर में कहीं भी सैकड़ों लोगों को सिर्फ एक लिंक से जोड़ने के साधन के रूप में उनकी लोकप्रियता माता–पिता, शिक्षकों और छात्रों के बीच काफी बढ़ गई। शैक्षणिक संस्था– कक्षाओं, परीक्षाओं और कार्यक्रमों को आयोजित करने के लिए सक्रिय रूप से इसका उपयोग करते हैं।

सोशल मीडिया के शिक्षा में लाभ :–

शिक्षा पर सोशल मीडिया के प्रभाव से कई लाभ हुए हैं जो छात्रों को बेहतर शैक्षिक संसाधन प्राप्त करने में मदद कर रहे हैं, खासकर परीक्षा के तनाव से निपटने के लिए। इन वर्षों में, सोशल मीडिया विभिन्न शैक्षिक लाभ प्रदान करने के लिए विकसित और अनुकूलित हुआ है।

1. **विशेषज्ञ की सलाह** – उत्साही विद्यार्थी हर वस्तु जानने के इच्छुक होते हैं, इसलिए उनकी जिज्ञासा कई सवालों को जन्म देती है। घर पर रहते हुए, हर समय स्कूल के शिक्षकों तक पहुंच पाना कठिन होता है। तभी सामुदायिक समूह या सोशल मीडिया के विशेषज्ञ संसाधन मार्गदर्शन करने और उत्तर की तलाश को पूरा करने में मदद कर सकते हैं।
2. **साझा शिक्षण** – शिक्षण विशेषज्ञ और सलाहकार छात्रों की सीखने की प्रक्रिया का मार्गदर्शन करने के लिए ऑनलाइन वीडियो, ऑडियो और अन्य अध्ययन सामग्री अपलोड करते हैं। उनमें से कई को सदस्यता की आवश्यकता होती है, लेकिन उनमें से अधिकांश मुफ़्त हैं और विभिन्न सामाजिक ऐप्स पर उपलब्ध हैं। छात्र समूह चर्चा या बहस के दौरान अपनी सीख और अंतर्दृष्टि ऑनलाइन साझा कर सकते हैं । यह सभी के लिए ज्ञान क्षितिज का विस्तार करने और विविध विषयों से संबंधित नए दृष्टिकोण और इनपुट प्राप्त करने में मदद करता है।
3. **अपडेट और अलर्ट** – शिक्षक सोशल मीडिया पर आधिकारिक समूहों से जुड़े कई लोगों को एक बार में महत्वपूर्ण अपडेट और जानकारी प्रसारित कर सकते हैं। चूंकि प्रत्येक अनुस्मारक और अद्यतन पर तुरंत ध्यान दिया जाता है, इसलिए सूचना वितरण में देरी कम हो गई है। यह छात्रों को पाठ्यक्रम में अपडेट, असाइनमेंट सबमिशन के अनुस्मारक, या किसी अन्य महत्वपूर्ण और प्रासंगिक समाचार जैसी चीजों से अपडेट रहने में मदद करता है।
4. **दूरस्थ शिक्षा** – सभी छात्रों के लिए अपना गृहनगर छोड़कर अपने सपनों के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में दाखिला लेना संभव नहीं है। इस समस्या से निपटने के लिए, उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और प्रमाणित डिग्री प्रदान करने में दूरस्थ या ऑनलाइन शिक्षा एक प्रभावी समाधान है। छात्र अध्ययन सामग्री और ऑनलाइन कक्षाओं तक पहुंच सकते हैं, लाइव और रिकॉर्डेड दोनों, और उन समुदायों के बारे में अपने संदेह को दूर कर सकते हैं जिनमें उन्हें जोड़ा गया है।
5. **माता–पिता की भागीदारी** – यह बच्चों के व्यक्तिगत और शैक्षिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। माता–पिता को अपने बच्चे की सीखने की प्रक्रिया में भाग लेने के लिए उसकी शिक्षा से अपडेट रहना चाहिए। स्कूल के ट्विटर और फेसबुक पेज अभिभावकों को नई परियोजनाओं, गतिविधियों और घटनाओं से अपडेट रखने में मदद करते हैं। व्हाट्सएप और फेसबुक समूह अपने बच्चे की शैक्षणिक प्रगति के बारे में जानने के लिए एक

सोशल नेटवर्क बनाने में मदद करते हैं। यह माता–पिता को सूचित रहने और घर पर अपने बच्चों को शैक्षिक और व्यक्तिगत सहायता प्रदान करने के लिए तदनुसार काम करने में मदद करता है।

आज कोरोना संक्रमण काल में बच्चों की पढ़ाई का बिल्कुल भी नुकसान नहीं हुआ है। सोशल मीडिया के माध्यम से बच्चे घर बैठे पढ़ाई कर रहे हैं। हाईस्कूल–इंटरमीडिएट से लेकर SSC,IAS & PCS सभी तरह की शिक्षा सोशल मीडिया के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है और बच्चे बहुत आसानी से लाइव वीडियो चलाकर अपने मन में आए प्रश्नों को भी पूछ सकते हैं और उनके जवाब भी पा सकते हैं। आजकल आपको किसी भी जगह जाना हो, तो किसी से भी रास्ता पूछने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि कई बार लोग जानबूझकर गलत रास्ता भी बता देते हैं। लेकिन अब घबराने की बात नहीं है, क्योंकि इंटरनेट के माध्यम से आप दुनिया के किसी भी कोने में सही जगह पर पहुंच सकते हैं। जी, हां गूगल मैप के माध्यम से आप किसी भी जगह आसानी से पहुंच सकते हैं। अब आपको किसी से रास्ता पूछने की ज़रूरत नहीं है।

सोशल मीडिया का षिक्षा में जोखिम :–

सोशल मीडिया का उपयोग करना वयस्कों के एहसास की तुलना में किशोरों के लिए अधिक जोखिम भरा हो जाता है। ये जोखिम निम्नलिखित श्रेणियों में आते हैं। सहकर्मी को सहकर्मी से अनुचित सामग्री, ऑनलाइन की समझ की कमी–गोपनीयता के मुद्दों और निम्नलिखित के तहत तीसरे पक्ष के विज्ञापन समूहों के बाहर का प्रभाव होता है।

- **साइबरबुलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न–** यह किसी अन्य व्यक्ति के बारे में झूठी , शर्मनाक या शत्रुतापूर्ण जानकारी संवाद करने के लिए डिजिटल मीडिया का उपयोग करने की एक प्रक्रिया है। यह सभी किशोरों के लिए सबसे आम ऑनलाइन जोखिम है। ऑनलाइन उत्पीड़न शब्द' साइबरबुलिंग 'शब्द के साथ अक्सर अंतर– प्रयोग किया जाता है। साइबरबुलिंग काफी आम है और अवसाद, चिंता, गंभीर अलगाव और दुखद आत्महत्या सहित गहन मनोवैज्ञानिक परिणाम पैदा कर सकता है।
- **फेसबुक डिप्रेशन :–** फेसबुक एक्सेस पर अत्यधिक चैटिंग पर शोध ने 'फेसबुक डिप्रेशन' नामक एक नई घटना का प्रस्ताव किया है जिसे डिप्रेशन के रूप में परिभाषित किया गया है यह तब विकसित होता है जब पूर्व–किशोर और किशोर सोशल मीडिया साइटों पर बहुत समय बिताते हैं। फेसबुक के रूप में और फिर अवसाद के क्लासिक लक्षणों का प्रदर्शन करना शुरू करते हैं। साथियों द्वारा स्वीकृति और संपर्क किशोरों के जीवन का एक महत्वपूर्ण तत्व है। ऑनलाइन दुनिया की तीव्रता को एक कारक माना जाता है जो कुछ किशोरों में अवसाद को ट्रिगर कर सकता है। जैसे कि ऑफलाइन अवसाद। preadolescents और किशोर जो फेसबुक अवसाद से पीड़ित हैं, सामाजिक अलगाव के लिए जोखिम में हैं और कभी–कभी' सहायता' के

लिए जोखिमपूर्ण इंटरनेट साइटों और ब्लॉगों की ओर रुख करते हैं जो मादक द्रव्यों के सेवन, असुरक्षित यौन व्यवहार या दमनकारी या आत्म–विनाशकारी व्यवहार को बढ़ावा दे सकते हैं।

डिपेक्टिव सोशल रिलेशन – इंटरनेट पर अनगिनत घंटे बिताने से बच्चे, परिवार और वास्तविक दोस्तों के साथ बहुत सीमित समय बिताते हैं। यह पारिवारिक बंधन को कमजोर करता है और वास्तविक लोगों के साथ बातचीत को सीमित करता है। ये बच्चे विभिन्न रिश्तेदारों के साथ वास्तविक जीवन की बातचीत को याद करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप विकृत सामाजिक कौशल और सीमित वास्तविक जीवन का सामाजिक नेटवर्क, सामाजिक अलगाव के लिए अग्रणी होता है। हैंकिंस और जियाओ (2009) और वैंकेनबर्ग (2019) का मानना है कि जिन किशोरों में घनिष्ठ मित्रता नहीं होती है , उनमें आत्मसम्मान और मनोवैज्ञानिक दुर्भावना के मनोवैज्ञानिक लक्षणों का स्तर लगातार कम होता है। जब लोगों का सामाजिक संपर्क अधिक होता है, तो वे शारीरिक और मानसिक रूप से खुश और स्वस्थ होते हैं।

उपसंहार

कई सोशल मीडिया साइटें कई विज्ञापन प्रदर्शित करती हैं जैसे बैनर विज्ञापन, व्यवहार विज्ञापन जो अपने वेब–ब्राउजिंग व्यवहार और जनसांख्यिकीय आधार विज्ञापनों के आधार पर लोगों को लक्षित करते हैं जो एक विशिष्ट कारक जैसे आयु, लिंग, शिक्षा, मार्शल के आधार पर लोगों को लक्षित करते हैं ऐसी स्थिति जो न केवल विद्यार्थियों और किशोरों की खरीदारी की प्रवृत्ति को प्रभावित करती है, बल्कि उनके विचार भी सामान्य हैं। माता–पिता के लिए व्यवहार संबंधी विज्ञापनों से अवगत होना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वे सोशल मीडिया साइटों पर आम हैं और किसी साइट का उपयोग करने वाले व्यक्ति पर जानकारी इकट्ठा करके संचालित करते हैं। ऑनलाइन दुनिया के बारे में बच्चों और किशोरों को शिक्षित करने और इसके खतरों का प्रबंधन और बचने के लिए एहतियात बरतना चाहिए। माता–पिता की एक प्रमुख चिंता यह है कि इंटरनेट बच्चों के सामाजिक कौशल को प्रभावित करता है। इसको देखने के दो तरीके हैं इंटरनेट आलोचक कहेंगे कि बच्चे सामाजिक गतिविधियों में कम समय व्यतीत करते हैं या परिवार और दोस्तों के साथ संवाद करते हैं। दूसरी ओर इंटरनेट उन्हें नए दोस्त बनाने में सक्षम बनाता है जो दूर स्थानों पर स्थित हैं। विभिन्न प्रकार के सोषल मीडिया के नेटवर्क षिक्षा के लिए सकारात्मक रूप से लाभदायक एवं सहयोगात्मक सिद्ध होते है।

सन्दर्भ :–

- कोविड–19 के कारण दुनिया भर में स्कूल बंद होने से लड़कियों पर सबसे ज्यादा असर पड़ेगा। यूनेस्को. 31 मार्च 2020. 24 जनवरी 2022.

- डोनेली, रॉबिन; पैट्रिनोस, हैरी एंथोनी (1 अक्टूबर 2022)। कोविड–19 के दौरान सीखने की हानि एक प्रारंभिक व्यवस्थित समीक्षा। संभावनाएँ. 51(4)रू 601–609. डीओआई10.
- लेनोक्स, जेनेट; रूज, निकोलस; बेनावाइड्स, फ़्रांसिस्को (1 सितंबर 2021)। कोविड–19 संकट पर शिक्षा की प्रतिक्रिया और शिक्षा नीति के निहितार्थों पर चिंतन से यूनिसेफ ने सबक सीखा। शैक्षिक विकास के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल. 102429-doi:10-1016@j-ijedudev-2021-102429A आईएसएसएन0738–0593. पीएमसी 8426293 । पीएमआईडी34518731। एस2सीआईडी236570133A-
- B.A. Primack, K.L. Kraemer, M.J. Fine, M.A. Dalton (2008). Association between media exposure and marijuana and alcohol use in adolescents, J Adolesc Health; 42: S3p.
- J.K. Mathew (2009). A study to evaluate the effectiveness of structured teaching programme on knowledge regarding negative influence of mass media among high school children in selected high schools tumku.
- J.W. Grube, E. Waiters (2005). Alcohol in the media: content and effects on drinking beliefs and behaviors among youth, Adolesc Med Clin.; 16: pp. 327–43p.
- K. Arya K. (2004). Time spent on television viewing and its effect on changing values of school going children, Anthropologist; 6: pp. 269–71.
- M. Ray, K. RamJat (2010). Effect of electronic media on children, Indian Pediatrics; 47: pp. 561–8.